VOL- X | ISSUE- II | FEBRUARY | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

अजमेर संभाग के नगरीय मतदाताओं के मतदान व्यवहार का भौगोलिक अध्ययन

अतुल कुमार जोशी,
सहायक आचार्य (भूगोल)
श्री प्रताप सिंह बारहठ राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
शाहपुरा, भीलवाड़ा

सारांश

विश्व में जिन देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था है वहाँ निर्वाचन का महत्त्व निर्विवाद होता है क्योंकि निर्वाचन को लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्राण माना जाता है और निर्वाचन प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी राजनीतिक प्रणाली की वैधता का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। संविधान द्वारा प्रदत्त वयस्क मताधिकार का प्रयोग करते हुए जनता अपनी सरकार का चयन करने में विशेष भूमिका दर्शाती है जिसे हम मतदान व्यवहार कहते हैं। अजमेर सीाग में राजनीतिक दल कांगेस व भाजपा के प्रति मतदाताओं का रूख रहा इन्हीं मतदाताओं का मतदान व्यवहार का अध्ययन करना मेरी रूचि रही इसी कारण मेरा प्रस्तुत शोध–पत्र में अजमेर संभाग के नगरीय मतदाताओं के मतदान व्यवहार के निर्धारक तत्त्वों का अध्ययन करने का प्रयास किया जा रहा है।

मूल शब्द: *लोकतंत्र, लोकतांत्रिक, चुनाव, अजमेर–मतदाता, मतदान–व्यवहार, प्रक्रिया, वयस्क मताधिकार*

प्रस्तावना

चुनाव व्यवस्था लोकतांत्रिक व्यवस्था का प्राण होती है। प्रत्येक शासन व्यवस्था में किसी न किसी प्रकार की चुनाव प्रक्रिया के महत्त्व को स्वीकार किया जाता है, किन्तु निर्वाचन प्रक्रिया तथा उस प्रक्रिया को संचालन करने वाली मशीनरी लोकतांत्रिक व्यवस्था का बुनियादी आधार है। लोकतंत्र में यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि चुनाव होते हैं, अपितु उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह है कि चुनाव किस भाँति होते हैं, कितने निष्पक्ष होते हैं और आम मतदाता का निर्वाचन व्यवस्था का संचालन करने वाले अभिकरण की निष्पक्षता और ईमानदारी पर कितना विश्वास होता है तथा आम मतदाता स्वयं निर्वाचन व्यवस्था में कितनी भागीदारी निभाता है। भारत के संविधान निर्माता चुनावों के महत्त्व से भली–भाँति परिचित थे इसलिए उन्होंने भारतीय संविधान के अध्याय १५ में अनुच्छेद ३२४–३२९ तक निर्वाचन आयोग की व्यवस्था की है।

भारतीय लोकतंत्र के प्रमुख पहलू के रूप में जनता को सार्वभौतिक वयस्क मताधिकार दिया गया है। जनता ने अपने मताधिकार में किस दृष्टिकोण का प्रयोग किया गया है यह एक महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक पहलू हैं जो कि भारतीय लोकतंत्र को आम चुनाव के माध्यम से एवं राजनीतिक दलों की प्रतिबद्धता एवं निष्ठा बोध के द्वारा यह प्रतिपादित करने का प्रयास करता है कि कि भारतीय जनता की लोकतंत्र के प्रति आस्था रूचि क्या है? वह कहां तक जागरूक है। इन सभी बातों को मतदान आचरण से जाना जाता है। मतदान आचरण का अर्थ है कि मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करने में किन–किन बातों से प्रभावित होता है मताधिकार करने में कौनसे कारक हतोत्साहित करते हैं और कौन से कारक व्यक्ति को एक विशेष उम्मीदवार या दल विशेष के पक्ष में मत देने के लिए प्रेरित करते हैं।

मतदान मनोवैज्ञानिक तत्त्वों से प्रेरित एक गूढ़ राजनीतिक प्रक्रिया है जो अनेक आन्तरिक एवं बाहरी तत्त्वों से प्रभावित होती है।

भारत में संसदीय लोकतंत्र की स्थापना की गई है जिसमें संघात्मक गणतंत्र में निर्वाचन की स्वतंत्रता एक स्वतंत्र सरकार को स्थापित करने की पहली शर्त होती है। लोकतंत्र में जनता अपने मत के माध्यम से जो इच्छा प्रकट करती है उसके इस राजनीतिक व्यवहार को ही साधारण अर्थों में मतदान व्यवहार कहा जाता हैं प्रस्तुत शोध अजमेर विधानसीाा चुनाव में मतदाताओं के व्यवहार से सम्बन्धित है।

वास्तव में अजमेर संभाग में मतदान व्यवहार सामान्य रूप से राज्य स्तरीय व राष्ट्रीय चुनाव व्यवहार से भिन्न नहीं रहा है। राजस्थान में चुनावों और मतदाताओं के व्यवहार में परिवर्तनशीलता को समय—समय पर राज्य और राष्ट्र की सामयिक आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है।

जाति—

जाति मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाला सबसे सशक्त कारक रहा है। इस सम्बन्ध में पॉल ब्रास लिखते हैं कि “स्थानीय स्तर गांवों में मतदान व्यवहार का सबसे महत्त्वपूर्ण कारक जातीय एकता हैं बड़ी और महत्त्वपूर्ण जातियाँ अपने चुनाव क्षेत्र में अपनी ही जाति के सदस्य को समर्थन करती है या ऐसे दल को समर्थन करती है जिनसे उनकी जाति के सदस्य अपनी पहचान स्थापित करते हैं।”

धर्म—

भारत में अनेक राजनीतिक दलों के निर्माण का आधार वर्ग या धार्मिक भावनाएं रही हैं। इत: इन दलों ने धार्मिक मुद्दों के आधार पर जनता स`मत प्राप्त करने का प्रयास किया है।

नेतृत्व—

भारत में मतदान—व्यवहार को प्रभावित करने में चमत्कारिक या करिश्मायी नेतृत्व को महत्त्वपूर्ण भूमिका देखेने को मिलती है। व्यक्ति—पूजा भारतीय राजनीति की प्रमुख विशेषता रही है। व्यक्ति—पूजा के कारण ही नेताओं को अलौकिक, अमानवीय या असाधारण गुणों से युक्त समझकर जनता ने भारी समर्थन दिया है।

वर्ग—

वर्ग आर्थिक मामलों में रोजगार, महंगाई में कमी, कर्जमाफी, मुफ्त की योजनाओं आदि में परिलक्षित होता है। ये मुद्दे कई चुनावों में अभियान का केन्द्र रहे हैं।

लिंग (जेण्डर)—

भारत में महिलाओं को अपने पक्ष में मतदान करने के लिए राजनीतिक दलों द्वारा महिलाओं के उत्थान में नीतियों पर भी विशेष जोर दिया जाने लगा है। हर चुनाव में राजनीतिक दलों द्वारा अपने घोषणा पत्र में महिलाओं से सम्बन्धित मुद्दों को शामिल किया जाने लगा है।

सत्ताधारी दल का प्रदर्शन—

भारत में जब जनता को लगता है कि सरकार अपने वादों को पूरा करने में असफल रही है तो जनता उसे सरकार को चुनाव में हरा देती है।

प्रचार के साधन एवं मीडिया—

प्रचार के साधन चुनावों में मतदान व्यवहार को सीधे प्रभावित करते हैं। आजादी के पश्चात् प्रत्येक चुनाव में हार्डिंग, बैनर, पोस्टर के माध्यम से मतदाताओं को प्रभावित किया जाता है।

सोशल मीडिया

२१वीं शताब्दी के दूसरे दशक में मतदान व्यवहार को प्रभावित करने में एक नया कारक जिसे ‘सोशल मीडिया’ कहा जाता है सामने आया है। फेसबुक, व्हाटसअप, ट्विटर, वेबसाइट, मैसेज आदि प्रचार के नए साधन हैं जो मतदाताओं को प्रभावित करते हैं।

राजनीतिक एनालिटिक नारायण बरेठ ने कहा कि भीलवाड़ा एलएस सीट पर मुकाबला

होगा क्योंकि अल्पसंख्यक और दलित मतदाता कांग्रेस का समर्थन करेंगे लेकिन शहरी और मध्यम वर्ग भाजपा के साथ रहेंगे। "भीलवाड़ा साम्प्रदायिक रूप से संवेदनशील है और कांग्रेस अल्पसंख्यक, सामान्य वर्ग और ओबीसी लोगों के मुद्दों को हल करने में विफल रही, उसी के अनुसार परिणाम आए। भाजपा का शहरी जनाधार सक्रिय था और उन्होंने जातिगत समीकरण भी संभाला।"

बेरठ ने कहा कि नागौर कांग्रेस के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह जिला परम्परागत रूप से पार्टी का समर्थन करता है, हालांकि यह कृषक समुदाय के मुद्दों को हल करने और एक नया नेतृत्व विकसित करने में विफल रहा, जिससे कुछ अलगाव पैदा हुआ। "पिछली सरकार से राजपूतों, जाटों और दलितों के असंतोष ने उन्हें कांग्रेस को वोट देने के लिए मजबूर किया।"

भाजपा के अजमेर जिलाध्यक्ष (ग्रामीण) प्रोफेसर बीपी सारस्वत ने कहा कि "यहाँ, मतदाता शिक्षित है और गम्भीर रूप से उम्मीदवारों को देखता है। अजमेर और भीलवाड़ा बीजेपी का गढ़ और पीएम नरेन्द्र मोदी की वजह से पार्टी को बढ़त; कांग्रेस तभी मैदान में है जब वे अच्छे उम्मीदवार उतारें। माहौल भाजपा के पक्ष में है।

कांग्रेस प्रवक्ता सत्येन्द्र सिंह राघव ने कहा कि परम्परागत रूप से लोग उस पार्टी को वोट देते हैं जो सरकार में है क्योंकि वे विकास की उम्मीद करते हैं। राघव ने कहा, "लोग जागरूक हैं और उन्होंने देखा है कि कैसे भाजपा सभी मोर्चो पर विफल रही है, चाहे वह महंगाई हो, भ्रष्टाचार हो, नोटबंदी हो या जीएसटी हो।

अजमेर संभाग में विधानसभा क्षेत्र की दृष्टि से दो सवा दो लाख मतदाता है भाजपा जातिगत आधार पर मतदाताओं पर टिका है जिसमें जाट व रावत जाति के प्रत्याशी टिकट प्राप्त करते हैं ऐसे में भाजना के प्रति जनता का आक्रोश रहा और गुर्जर, राजपूत, मुस्लिम, ब्राह्मण भरोसे कांग्रेस पार्टी। किशनगढ़ क्षेत्र में जाति ने मतदान व्यवहार को प्रभावित किया और अजमेर उत्तर केकड़ी से मतदाताओं ने कांग्रेस को भारी मतों से जीत दिलाकर सम्मान दिया है। नसीराबाद में मतदाताओं का भाजपा की तरफ रूख रहा लेकिन अजमेर की ब्यावर व पुष्कर विधानसभा में जातिय गणित काम न आकर वहां व्यक्तित्व प्रभावी रहा।

अजमेर में नगरीय क्षेत्रों में हुए चुनावों में मतदाताओं का रूझान किसी जाति व्यक्ति या धर्म के आधार पर न होकर अपने विधानसभा क्षेत्र में बदलनाव पर फोकस था हालाँकि वहां की परम्परा रही है कि ब्राह्मण, जाट, मुस्लिम, गुर्जर, राजपूत, कांग्रेस पार्टी के पक्ष में तथा अन्य जैसे जाट, रावत आदि भाजपा के पक्ष में समर्थन दे रहे हैं वहां के आम—जनता महँगाई, आर्थिक समस्याएं, बेरोजगारी राजनीति स्थिरता की आकांक्षाएं लिए हुए है फिर भी मतदाताओं ने केकड़ी विधानसभा से कांग्रेस को भारी मतों से जीत हासिल करवा दी। वहीं नसीराबाद में भाजपा की ओर रूख रहा। प्रत्याशियों का सही चयन ही मतदाताओं को कांग्रेस या भाजपा के पक्ष में मतदान के लिए प्रेरित करते हैं।

कई क्षेत्रों में मतदाताओं की उदासीनता भी झलकती है इसका कारण यह है कि जनता का मानना है कि कोई भी सरकार विकास कार्य नहीं करती बिना औचित्य के हिन्दू—मुस्लिम व धर्म का मुद्दा बना देते हैं जबरदस्ती माहौल खराब करते हैं, समस्याएं यूं ही है। इस प्रकार की चिारधारा भी मतदान व्यवहार की निर्धारित होती हैं।

संदर्भ

१. चौधरी, डी.एस., कार.जी.के., इलेक्शंस एण्ड इलेक्ट्रॉल बिहेवियर इन इण्डिया, कांति पब्लिकेशंस, दिल्ली १९९२, पृ. १८

२. ठाकुर, प्रभा, चुनाव घोषणा—पत्र: सिद्धान्त एवं स्थिति, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, २००६, पृ. ५०
३. चन्द्र, बिपिन : आजादी के बाद का भारत हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, २०११, पृ. ६५
४. रंजन, राजीव : चुनाव, लोकसभा और राजनीति, ज्ञानगंगा, दिल्ली, २०००, पृ. ४५
५. सुन्दररियाल, आर.बी.दिघे, शरद, चुनाव सुधार एवं प्रक्रिया, श्री पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, १९९७, पृ. ८
६. गोस्वामी भालचन्द्र : भारत में चुनाव सुधार : दशा और दिशा, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, १९९९, पृ. ८२
७. कोठारी, रजनी, कास्ट पॉलिटिक्स इन इण्डिया, आरियन्ट लांगमैन, दिल्ली, १९७०, पृ. ७०
८. बटलर, डी., पॉलिटिकल चेंज इन ब्रिटेन, लन्दन, १९६९, पृ. २००
९. मोहन, अरविन्द : पूरी तरह मोदी की सरकार, दैनिक भास्कर, २७ मई, २०१४, पृ. ४
१०. जैन, धर्मचन्द, भारतीय लोकतंत्र, प्रिंटवैल, जयपुर, २०००, पृ. १०
११. नारंग, ए.एस., भारतीय शासन एवं राजनीति, गीतांजली पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, २०१०, पृ. ३०२
१२. पारेख, चुन्नीलाल लालूभाई, “एमीनेट इंडियंस ऑन इंडियन पॉलिटिक्स”, फॉरगॉटन बुक्स, २०१७, पृ. ६०—६९